"ईश्वर चन्द्र सक्सेना रचित कहानी संग्रह 'देह-गंध' में नारी विमर्श"

डॉ विनोदचंद्र जी· चौधरी (हिंदी विभाग)

श्रीमती आर· एम· प्रजापति आर्ट्स कोलेज, सतलासना

सार (abstract)

'नारी-विमर्श' या 'स्त्री' को केंद्र में रखकर् अधिकतर् महिला लेखकों ने कलम चलायी है, किन्तु जहा कही पुरुष सर्जको ने नारी समस्याओं को केंद्र में रखा है तथा उनकें हर नीजी पहलुओ को बारीकी से प्रस्तुत करनें का काम किया है उनमें से एक है 'ईश्वर चन्द्र सक्सेना' / स्त्री-चित्रण को लेकर एक महिला सर्जक की लेखनी में जो खुलापन आप नहीं देख पाओंगे वह एक पुरुष सर्जक में आप देखोंगे / यहाँ मैंने 'ईश्वर चन्द्र सक्सेना' के कहानी-संग्रह 'देह-गंध' को केंद्र में रखकर् महिलाओं की चरित्र विषयक समस्याओं को कहानीओ के आधार पर और कहानिओ के सन्दर्भ देकर प्रस्तुत करने का प्रयास किया है / साथ ही 'ईश्वर चन्द्र सक्सेना' का कहानी-संग्रह 'देह-गंध' अत्यंत आधुनिक कहानी-संग्रह है और लेखक भी वर्तमान है, कहानियों की समस्याएं भी समकालीन है और उनका सर्जन जारी है /

कुंजी-शब्द (key-words)

रुढ़िवादी, परम्परा, जन्तु विज्ञान, कुनैन, शिलाखंड, दैहिक, हतप्रभ, सुहाया, धमासान, तलकी,

"ईश्वर चन्द्र सक्सेना रचित कहानी संग्रह 'देह-गंध' में नारी विमर्श"

जब आधुनिक वर्तमान कहानी की बात मेरे सामने आयी तो मुझे तुरंत ही हमारे गुजरात के पडोसी प्रदेश राजस्थान के कोटा में रहकर बहुविध कलम चलाने वाले कहानीकार 'ईश्वर चन्द्र सक्सेना' जी याद आये / मैंने कुछ महीनो पहले उनकी कहानियो को पढ़ा था / वैसे तो ईश्वर चन्द्र जी कहानीकार के साथ-साथ कवि एवं उपन्यासकार भी है / उनकी प्रकाशित रचनाओ में 'कुहासे में लिपटा भविष्य'(काव्यसंग्रह),'खंडित अतीत' और 'लम्हा लम्हा जिन्दगी' (उपन्यास), 'मै ऐसी ही हु' और 'देह-गंध' (कहानी संग्रह) उपलब्ध है / कालेज समय से ही वे अनेक पत्र-पत्रिकाओ का संपादन करते रहे है / ऍम· एससी·(जन्तु विज्ञान) की पढाई करने के बावजूद भी वे साहित्य में जबरजस्त रुची रखते है / स्वतंत्र लेखन के साथ-साथ उन्होंने मलयालम, तेलुगु, बंगला एवम गुजराती भाषाओ में कई कहानिओ का अनुवाद किया है / उनके साहित्य में खासकर कहानिओ ने मुझे प्रभावित किया है / उनके कहानी साहित्य के केंद्र में नारी ही नजर आती है / प्रस्तुत प्रपत्र मैंने उनके दुसरे कहानी संग्रह को केंद्र में रखकर लिखा है / वैसे भी 'देह-गंध' कहानी संग्रह में स्त्री दर्शन ही दिखाई देता है / नारी के कई रूप एवम कई अवस्थाए एवम हर स्थिति में सामने आने वाली समकालीन समस्याए इन सारी कहानिओ में हमें नजर आती है / लेखक ने संग्रह की भूमिका में कहा है -"आज नारी

विमर्श पर चर्चाए है / आज पुरानी रुढ़िवादी पिढी भी नारी स्वतंत्रता, जीवन को किसी हद तक स्वीकार कर चुकी है / कुछ रुढ़िवादी, परम्परावादी जो शायद समजोता न कर पाने के कारन स्वयं ही टूटकर रह गई है, उनके लिए इस तरह का यथार्थवादी साहित्य गले उतारना मतलब कुनैन की कड़वी गोली का स्वाद चखना होता है /”१

ईश्वर चन्द्र सक्सेना जी का पहला कहानी संग्रह ‘मै एसी ही हू’ है / सन २०१० में प्रकाशित सक्सेना जी के दुसरे कहानीसंग्रह ‘देह-गंध’ शीर्षक में कुल मिलाकर तेरह कहानिया है / इन कहानियो के शीर्षक है - गनेश, खेल में भी खेल, समजौता, डॉन की मोम, अतीत की परछाई, चिथड़े-चिथड़े हुई जिन्दगी, सुनिता, रीमा बोस, विडम्बना, जमाना बदल गया, पिगलता शिलाखंड, न जाति तो अच्छा रहता और देह-गंध / उपरोक्त सभी कहानिओ में सामाजिक यथार्थ के नग्न चित्रण के साथ-साथ एक बात सामान्य है और वह है चाहे समस्या कोई भी हो, परिस्थितिया कोई भी हो, संयोग कोई भी हो, पृष्ठभूमि कोई भी हो, परिवेश कोई भी हो अंततः सहना पड़ा है कही न कही किसी भी रूप में एक स्त्री को / कही उसका दैहिक शोषण हुआ है, कही उसका मानसिक शोषण हुआ है, कही उसको त्याग या बलिदान की मूर्ति बनना पड़ा है, कही उसको समजौता करना पड़ा है तो कही उसको आत्महत्या भी करनी पड़ी है / ‘गनेस’ कहानी की समस्या है साटे में सगाई या विवाह करने पर उत्पन सामाजिक समस्याए सामने लाना / गनेस अपनी अपनी पत्नी को बहुत चाहते हुए भी सिर्फ इसलिए मुह मोड़ता है की उसका साला गनेस की बहन को वापिस भेज देता है / शुरु से बीमार रहने की वजह से वह मर जाती है और वह भी दवाइयों के अभाव से पर गनेस एक बार भी देखने नहीं जाता / जब वह दूसरी शादी के बारे तैयारीयों करता है तब छोटा कर्मी होने से शर्माजी के द्वारा बड़े अफसरों से सहायता चाहता है / लेखक तब क्रोधित हो जाते है, उनके ही शब्दों में -“आप चाहते है मै इस आदमी की हेल्प करू ताकी ये एक और औरत की हत्या कर दे / आप भी शर्माजी किस आदमी का फेवर कर रहे है ? मै इसकी बिलकुल हेल्प नहीं करूँगा / ही इस द ब्लडी किलर, प्लीस डोन्ट फेवर हिम, इसने अपनी पत्नी को इसलिए घर से निकल दिया कि इसकी बहन अपने पति से झगडकर अपना घर छोड इसके यहाँ आ गई थी / क्योकि बहनोई ने इसे पिटा था, इसने भी बदले में अपनी बिमार पत्नी को अस्पताल से ले जाकर उसके पीहर में फेक दिया था, बेकार सामान की तरह, और वो भी वहा बिना ईलाज के मर गई, जिसकी सोच इतनी घटिया हो, वो कितना मतलभी होगा ? मै इसकी कोई हेल्प नहीं कर सकता, मुझसे और पाप नहीं कराए, गनेस जी, मुझे माफ़ करे / शर्माजी, मुझसे और अपराध नहीं कराइए की मुझे अपने आप पर शर्मिन्दा होना पड़े / तुम क्यों इस पचड़े में पड़ते हो विनोद शर्माजी, ये लोग भावना से नहीं जीते, इनकी जाति में विवाह के कुछ मायने भी है ? उनके लिए सहानुभूति किस कामकी ? इनके यहाँ कब रिश्ता जुड़े कब टूट जाए ? मैंने गनेस की तरफ हाथ उठाते कहा /”२

‘खेल मे भी खेल’ कहानी में खेल जगत की नग्न विद्रूपताओं को खोलकर हमारे सामने रख दिया है / हमारे राज्य स्तरीय खेलो में खिलाडियो के कोच एवम मेनेजर किस हद तक गीरते है, यहाँ तक की वे अपनी बच्ची यो की उम्र की महिला खिलाडियो का शारीरिक शोषण सिर्फ उन्हें मैदान में खिलाने के बदले में करते है / वहा उनकी काबेलियत कुछ भी मायने नहीं रखती / और यदि काबिल होने के बावजूद यदि अपने को उनके हवाले नहीं किया तो मैदान में मौका नहीं दिया जाता, जबकि उनकी बात मान ली तो बिना

काबिलियत मौके पर मौके मिलते रहते है / यहाँ कमला महेरा नामक खिलाडी इसी तरह का रास्ता अपनाती है / “यार उस हरामी कोच ने नोच डाला है / साला जानवर की तरह टूट पड़ा /” “सब कुछ एक ही दिन में वसूल कर लिया /” कहकर बाथरूम में चली गई / थोड़ी देर में ब्रश करती हुई लौटी, “यार, मुह से शराब की बदबू आने लगी है / पता नहीं क्या पीकर शायद देशी पीकर अपनी जवानी, अपना जोश दिखाते है, सारा शरीर ही टूटने लगा है /” मुझे लगा नींद आने लगी है, मालिश से शरीर का रोमांच अलग हो गया था / मुझे लगा राधा मेंम जा चुकी थी, और कमला मेंम बडबडा रही थी, “साले, हमें तो कोई खिलाडी ही नहीं समजता है, सिर्फ भोगने की वस्तु समजता है /” वो जोर से चीखती हुई बाथरूम में चली गई /”३

‘समजौता’ कहानी में सीमा नामकी एक घरकाम करके अपने जीवन निर्वाह करने वाली मजबूर स्त्री की विपदा प्रस्तुत की गई है / लेखक ने एक बार इस स्त्री से अपने घर का काम करवाया था / अत फिर एक बार दीपावली की छुट्टियों में सीमा की जरुरत महसूस हुई / जब सीमा की याद आयी तो लेखक को पिछली दफा की कुछ बाते भी याद आ गयी / सीमा पहली बार काम करने आयी थी तब उसने अपनी बेटी की शादी के लिए पांच हजार रुपये मागे थे / उसे एक महीने बाद ले जाने को भी कहा था / पर सीमा लेने नहीं आयी थी / आखिर लेखक उसके घर गए और उसे उसकी लड़की की शादी की बात याद करवायी / लेखक को आश्चर्य हुआ / वह बेहद खुश थी, शर्मा भी रही थी / उसने अपनी कथनी इस प्रकार प्रस्तुत की - “जहा शादी करनी थी वो लड़का उसे पसंद नहीं था / उसका किसी दुसरे से चक्कर था, वो उसी के साथ भाग गई, परन्तु दुर्गा मइया की कृपा है / लड़का अच्छा है / दीपावली पर दोनों आ रहे है / उन्ही के लिए एक कमरा बनवाया है / सच कहू अंकल उसने अनजाने में मुझे एक बार फिर कर्जा लेने से बचा लिया /” उसके चेहरे पर तनावमुक्त भाव था / मै हतप्रभ था कि लड़की भाग गई फिर भी खुश है / लगता है सीमा ने समजौता कर लिया है / गरीब क्या करे, कर्जे से डूबने से बचने के लिए उसे विपरीत परिस्थितियों से भी समजौता करना पड़ता है / मैंने उसे इसके लिए दीपावली पर शुभकामनाए दी /”४

‘अतीत की परछाई’ कहानी में जोली मिश्रा नामक लड़की ने जो कर्तव्य निभाया जिसे निभाने में उस पिता के सगे बेटे निष्फल रहे / लड़की की मा की मृत्यु के बाद उस मा के दुसरे पति पिछले दस साल से जोली के पास रहते थे / उनके सगे बेटो ने उनकी खबर तक नहीं ली / उनकी मृत्यु के बाद उन्ही के अकाउंट से बीस हजार रुपये उनके क्रियाकर्म के लिए जोली ने निकले थे, वह भी उनके पिताने मृत्यु से पहले ईसी काम के लिये रखे थे / इसी बात का फायदा उठाते हुए जोली के सावके भाइयो ने जोली पर पुलिस केस कर दिया / आख़िरकार इस केस में वजूद न पाकर –“थानेदार ने सारी बात समजकर उन्हें डाटा, कहा, “एक लड़की सगी न होकर भी इतना कर गई और तुम इसके अहसानों का यह बदला दे रहे हो /” थानेदार की धमकी के बाद आंटी ने अपनी ऍफ़· आई· आर· वापस ले ली / वो तो चाहते थे की मुझे सजा मिले, उस जुर्म की जिसमे मैंने पापा के घर की इज्जत ढकनी चाही / मुझे क्या मिला, पता नहीं परन्तु मम्मी पापा के नाजायज रिश्तो के अतीत की परछाई आज भी मेरे अन्तर्मन एवम मेरे आत्मसन्मान को बहुत ठेस पंहुचा रही है /” ५

'रेवती' नामक पात्र को केंद्र में रखकर लिखी गई कहानी 'चिथड़े-चिथड़े हुई जिन्दगी' में रेवती का वृतांत सुनकर हमारे रोंगटे खड़े हो जाते है / ऊँची जाति की होने के बावजूद शादी के तिन वर्ष बाद पति को टीबी हो जाने से एक युवा लड़की की जिन्दगी कैसे बरबाद हो जाती है, इसका ब्यौरा सच में पढ़ते ही हमें जकजोरता है / घर की आमदनी बंद हो जाने से रेवती को दुसरो के घरों में काम करने जाना पड़ा / वहा उसने वह सब कुछ देखा और पाया भी जिससे वह काफी लम्बे समय से व्याकुल और वंचित थी / जिसमे घर के सामान, रुपया, कपडे, बनाव-सिंगार की चीजे, और मन एवम तन की भूख भी शामिल थी / एक बड़े साहब के घर से यह सब मुमकिन हो पा रहा था / साहब भी रेवती की मज़बूरी का कोई फायदा नहीं उठा रहा था बल्कि रेवती की इच्छा से यह हो रहा था / आखिर रेवती को साहब का गर्भ रहता है साहब भी इसे खुशी से स्विकार करना चाहते थे किन्तु विधाता को कुछ और ही मंजूर था / रेवती का पति मर जाता है / रेवती के पीहर वाले रेवती को अपने साथ ले जाते है / रेवती की दुर्दशा यही से शुरु होती है- "गाव में मुझे अभी महिना भी नहीं हुआ था, परन्तु मेरे भाई-भाभी को यह नहीं सुहाया, मैंने वापस साब के पास जाना चाहा, पर भाई ने सोचा कि मै चुप-चाप भाग नहीं जाऊ / पिताजी को धोखे में रखकर शहर छोड़ने आने के बहाने मुझे बेच दिया / बचपन के प्रेम को मै नहीं पहेचान पाई-भाई को स्कुल ले जाना, उसके आगे पीछे डोलना, उसका ध्यान रखना इन सब मार्मिक संबंधो का यही तो सिला मिलना था / चार माह का पेट अब उजागर होने लगा था / भाई ने बहुत कोशिश की कि मै ये पेट गिरा दू, भ्रूणहत्या कर दू, ताकी बाजार में मेरी ज्यादा कीमत मिले / मेरे नहीं मानने पर, मुझे खोटा मॉल समजकर आधे-पौने दामो में ही बेच डाला / ये न शादी थी न कोई रस्मो-रिवाज, न बाजा न शहनाई, मेरा हाथ अनजान के हाथ में पकड़ा दिया /"६ यहाँ उसकी कहानी समाप्त नहीं हो जाति / जब उन लोगो को पता चला की ये पेट से है तो घर में धमासान हो गया / आख़िरकार सास के समर्थन से एक लड़की को पैदा होने का अवसर मिला / जब अरसे तक लड़का नहीं दे सकी तो उन लोगो ने रेवती से पुरे पैसे वसूलने शुरु किये / दिन भर खेतो में मजदूरी और रात को दो जवान बेटो से नुचवाना / जब लड़का नहीं हुआ तो नई लड़की की तलाश शुरु हुई / घर में इतनी सम्पन्नता नहीं थी अत रेवती को बेच दिया / उधर रेवती की मुनिया को भी बेचने की योजना बन रही थी / आखिरकार रेवती ने गंगा ताई को बुलाकर अपनी और साब की प्यारी मुनिया को साब तक पहुचाने का प्रबन्ध किया /

'न जाती तो अच्छा रहता' यह कहानी वास्तव में 'उषा प्रिय्म्वंदा' की 'वापसी' कहानी जैसी है / फर्क सिर्फ इतना है कि वापसी में एक पुरुष की वापसी होती है जिनका नाम गजाधर बाबू है, जबकि इस कहानी में एक स्त्री पात्र लौट जाति है जिसका नाम रमा है / कुछ भी व्यवसाय न करने वाले रमा के पति अतुल अपने मित्रो से घिरे रहते है / हर रात मित्रो के साथ रंगीन बनाते रहते है / निवृत होते रमा ने भी सोचा था की आराम से और प्रेम से वह अतुल के साथ रहेगी / पर यहाँ आते ही वह अतुल और उनकी मण्डली की मानो सिर्फ एक परिचारिका बन गई हो ऐसा उसे लग रहा था / आख़िरकार उसने वापिस उसी जगह जाने का निर्णय लिया जहा से वह सेवानिवृत हुई थी / "मै जा रही हु अतुल /' मै बड़ी कठिनाई से बोल पाई / मेरी आँखे भर आई थी / वो दरवाजे पर मुझे छोड़ने आये और बोले, "क्यों मुझे तंग करती रहती हो रमा, न जाति

तो अच्छा रहता / फिर भी जब चाहो आ जाना /' "तुम नहीं जानते अतुल, मुझे कितना काम करना है ? जो यहाँ रहकर संभव नहीं है /" मै अटेची उठाकर चल पड़ी / मैंने पीछे मुडकर नहीं देखा..../"६

कहानीसंग्रह की प्रमुख कहानी है 'देह-गंध' / इस कहानी में एक संपन्न व्यक्ति के द्वारा एक् श्रमिक परिवार के विध्वंश का चित्रण कहानीकार ने किया है / देवा और कजरी दो पैसे कमाने के वास्ते शहर की तरफ चल देते है / वहा उन्हें काम तो मिल जाता है, पर उस काम और सुकून के बदले में मालिक कुछ ओर ही चाहता है / आखिर मालिक ने कजरी के पति देवा के रिक्शा की किश्ते भर ने के बदले में उसकी देहगंध को प्राप्त करना चाहा / कजरी ने भी सिर्फ मालिक के साथ सोने के बदले में बहुत कुछ मिलने की उम्मीद से यह बात देवा को बताई / देवा क्रोधित होकर मालिक का खून कर डालता है / बाद में जो होता है वह होकर रहता है / जेल में सजा काटते हुए देवा से मिलने कजरी हर कीमत पर जाति है / "देवा, आज तू इस देह के कारण यहाँ ये सजा पा रहा है / मुकदमे में सारे जेवर चले गए कोई बात नहीं, पर मुझे दुःख है कि मै तुजे बचा नहीं पाई / मै कितनी गिर गई देवा, मुझे कहते शर्म आ रही है, मै कितनो के साथ सोई, कितनो ने इस देह को नोचा, खसोटा है / मै यह कहने लायक नहीं रही, वकील, थानेदार, इस जेल के जेलर ने कितनी रातो तक कितने दिन मेरा शोषण किया है ?.....तभी अचानक देवा को एकदम क्या हुआ ? उसने एकाएक उसके बाल पकडकर जटक दिया / उसके चहेरे पर कठोरता राक्षस की तरह उभर आयी / धृणा का जहर उगलता वो कजरी से बोला, "तू अपना शरीर नुचवाने से पहले मर क्यों नहीं गई, रंडी, इस शरीर को कोई दूसरा छूता यही तो मुझे बर्दास्त नहीं था / इसीलिए तो मैंने मालिक की हत्या कर थी / इसी कारण आज मै यहाँ सलाखों के पीछे बंद हु / तेरे खातिर, तेरे प्यार के खातिर /" उसने हुकारत से मेरी और देखा और पिच से थूंक दिया / कितनी तलकी थी, उसके शब्दों में, और फिर वो रुका नहीं और वापस मुडकर चला गया / "जा डूबकर मर जा, अब मुझे शकल मत दिखाना.../"७ आख़िरकार देवा की धुत्कार की मार को सहन न कर पाने की वजह एवम देवा से बेतहासा प्यार करने वाली कजरी पानी में छलांग लगाकर मानो अपने बिगड़े तन को धोने का यत्न करती है, अपने प्यार का प्रमाण अपने देवा को देने के लिए प्राण त्याग देती है /

सन्दर्भ सूचि :

(१) देह-गंध; ईश्वर चन्द्र सक्सेना, भूमिका. पृ.८

(२) देह-गंध; ईश्वर चन्द्र सक्सेना, गनेस (कहानी). पृ.१८

(३) देह-गंध; ईश्वर चन्द्र सक्सेना, खेल में भी खेल (कहानी). पृ.३०

(४) देह-गंध; ईश्वर चन्द्र सक्सेना, समजौता (कहानी). पृ.५२

(५) देह-गंध; ईश्वर चन्द्र सक्सेना, अतीत की परछाई (कहानी). पृ.६५

(६) देह-गंध; ईश्वर चन्द्र सक्सेना, न जाती तो अच्छा रहता (कहानी). पृ.१७०

(७) देह-गंध; ईश्वर चन्द्र सक्सेना, देह-गंध (कहानी). पृ.१८२